नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 23.10.2018

प्रकाशनार्थ

नाथपंथ ने न केवल भारत की आध्यात्मिक साधना को समृद्ध किया अपितु क्रियात्मक योग के वे प्रवर्तक थे। नाथपंथी योगियो ने अपनी साधना पद्धति के जन–जन तक पहुॅचाने के लिए हर प्रस्त–हर क्षेत्र की भाषा में अपनी बात कही, अपनी रचनाएॅ की। तमिल, उड़िया, मराठी, कन्नड़, बंगाली, भोजपुरी, ब्रज, अवधी, पंजाबी इत्यादि भाषाओं में नाथपंथी योगियो की बानिया एवं उनकी रचनाएॅ प्राप्त होती है। भारत वर्ष की ऐसी कोई भाषा नहीं जिसे नाथपंथ के योगियों ने प्रभावित न किया हो। यहॉ तक कि नेपाली एवं तिब्बती भाषा को भी नाथपंथ ने प्रभावित किया। नाथपंथ योगियों ने एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में जोडा। इस प्रकार उनके भाषाओं के आपसी शब्दों को साझा करने की एक सशक्त परम्परा नाथपंथ ने प्रारम्भ की। उक्त बाते महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज जंगल धूसड़ द्वारा संचालित महायोगी गोरक्षनाथ शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि इलाहाबाद विशविद्यालय इलाहाबाद के हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. राम किशोर शर्मा ने कही।

उन्होने आगे कहा कि 'गोरखबानी' सिद्ध–सिद्धान्त पद्धति, अमरौध–प्रबोध, योग–मार्तण्ड, गोरक्षकौमुदी, गोरक्षकल्प, गोरक्षगीता, गोरक्षचिकित्सा, गोरक्षपंचम, गोरक्षशतक, गोरक्षपद्धति, गोरक्षशास्त्र, गोरक्षसंहिता, ज्ञानप्रकाशतक, ज्ञानशतक, ज्ञानामृत योग, नाड़ीज्ञान प्रदीपिका, महार्थमंजरी, योगचिन्तामणि, योगमार्तण्ड, योगबीज, योगशास्त्र, योगसिद्धान्त पद्धति, विवेक मार्तण्ड, श्रीनाथसूत्र, हठयोग, हठसंहिता जैसी 80 ग्रन्थों का प्रणयन नाथपंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ ने किया। ये सभी रचनाएॅ हिन्दी, संस्कृत एवं अवधी में है तथा इनका देश की विभिन्न लोकभाषाओं में इनका विवरण एवं गोरखनाथ के उपदेश प्राप्त हैं। एक योगी के इतने विशद साहित्य ने भाषा को न केवल समृद्ध बनाया अपितु अपने को जानने वालों के बीच लोकभाषा का प्रसार भी किया।

विशिष्ट अतिथि मारीशस के शिक्षामंत्रालय के डॉ. आशोक कुमार रामप्रसन्न ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ की साहित्य रचना की परम्परा को नाथपंथ के अन्य योगियों ने भी इसे आगे बढ़ाया। नाथपंथ के प्रसिद्ध योगी चौरंगीनाथ, चर्पटीनाथ, कानिफानाथ, जालंधरनाथ, भर्त्तृहरि, गोपीचन्द, गहनीनाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञाननाथ, रतननाथ, नागनाथ, चुणकरनाथ, माल्लिकानाथ, बालनाथ जैसे अनेक प्रसिद्ध नाथपंथ के योगियों की रचनाएॅ देश के विभिन्न भाषाओं में प्राप्त होती है।

मुख्य वक्ता डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि नाथपंथ के योगियों के दर्शन एवं भाषा

का प्रभाव मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन पर भी पड़ा। तुलसी, कबीर, नामदेव, तुकाराम, एकनाथ, हरिदास निरंजनी, गुरुनानक, जैसे विविध सन्त–महात्माओ की रचनाओं पर नाथपंथी साहित्य और भाषा का प्रभाव देखा जा सकता है। यद्यपि कि लोकभाषा के संवर्धन में नाथपंथ के योगियो के प्रभाव पर अभी शोधपूर्ण कार्य होना बाकी है, जिसे स्थापित हो रही शोधपीठों अथवा शोधकेन्द्रो को अपनी कार्ययोजना का हिस्सा बनाना होगा।

अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य डॉ. प्रदीप राव ने कहा कि भारत में सामाजिक–आध्यात्मिक परिवर्तन के लिए जब–जब किसी ऋषि, सन्त अथवा महापुरुष ने अभियान चलाया अथवा किसी पंथ की नींव डाली, उसने लोक भाषा को समृद्ध किया। बिना लोकभाषा के प्रयास के सामाजिक परिवर्तन का अभियान चल ही नही सकता। नाथपंथ जितना प्रभावी सर्वव्यापी जनान्दोलन बना उतना ही उसने देश की सभी लोकभाषा को समृद्ध किया। इस अवसर पर जे.एम.महाविद्यालय बिहार के पूर्व प्रधानाचार्य डॉ. विश्वनाथ शर्मा वीरकुँवर सिंह विश्वविद्यालय छपरा, बिहार के डॉ रविन्द्र कुमार 'शाहाबादी' बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के डॉ. अच्छेलाल ने भी अपने–अपने विचार रखे। संचालन डॉ. आरती सिंह ने किया।

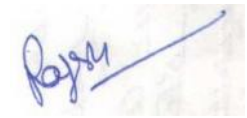

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी